“घर कब आओगे”

लघु नाटिका

[Scene- 1]

सिपाही के शहीद होने की खबर पुरे गाव में फैल चुकी हे| पर छोटी सी बेटी को समज में नहीं आ रहा है की उसकी मम्मी उसकी बातो पर ध्यान देते हुए गुमसुम क्यु बेठी है| क्यों लोग बार-बार जमा हो रहे है|

कुछ सुनती है|

फिर मम्मी से आकर सवाल पूछती है|

बेटी : मम्मी सब कह रहे है पापा ने अपने देश के लिए अपनी जान दे दी जान देना क्या होता है?

मम्मी : बेटा तुम आराम करो| सिर्फ बेटी को देखती है| बेटी को कोई अंदर ले जाता है| मम्मी सोचती है के अपनी बेटी को क्या जवाब दे?

थोडी देर के बाद फिरसे बहार आकर.....

बेटी : मम्मा आप मेरा घोडा बनो ना....पापा की तरह.....जब तक पापा नहीं आते मे आपके साथ खेलुगी |

[बेटी की नानी आकर भारी मन से उसको समजाती है बेटा आप बार-बार मम्मी को एसे

सवाल मत पूछो ..... पापा अब वापस नहीं आयेगे|

बेटी : क्यूं नानी.....

नानी : बेटा आपके पापा अपने देश को बचने के लिए दुश्मन से लडे खूब लड़े|

बेटी : बिचमे , हा पापा अक्सर सुनाया करते है एसे किस्से.....

नानी : खुब लडे, बेटा किन्तु वह सीमा पर देश को बचाते समय अपनी जान नहीं बचा पाए|

[बेटी भागकर मम्मी के पास जाती है, मम्मी नानी कह रही है मेरे पापा ने जान दे दी,वो वापस नहीं आयेगे]

बेटी : मम्मी यह सच है? तो मेरा घोडा कौन बनेगा?

मम्मी : खबर सुनने के बाद से पहला शब्द अब बोलती है....मै.....

बेटी : मम्मा , आपको तो अच्छा नहीं लगता आपतो पापा को ही मेरा घोडा बनने के लिए कहती है|

मम्मी : बेटा अब मम्मा तुम्हारा घोडा बनेगी|

बेटी : मम्मा जब हम बहार जायेगे तब गाड़ी कौन चलायेगा?

मम्मा : बेटा मम्मा

बेटी : पर मै कसकी गोदी में बेठुगी?

मम्मा : मम्मा आपको गाड़ी चलते वक्त गोदी में लेकर जाएगी|

बेटी : पापा ने ऐसा क्यूं किया |

इसबार मुझे कितने सरे खिलोने मंगवाने है उनसे.....

नानी : बेटा आपके पापा ने पापा ने देशके लिए अपना बलिदान दिया है |

बेटी : बलिदान का मतलब क्या होता है!

नानी : अपने प्राणो की चिन्ता किये बिना अपने देश को बचाया | नहीतो दुश्मन घर में आजाते| हम सब लोगो का जीना हरम कर देते | और कितने लोग मारे जाते |

बेटी : तो इसका मतलब के लोगो के लिए भगवान ने मेरे पापा की जान क्यु ली ?

मम्मी : बेटा तुम्हारे पापा सिपाही है.....रुककर थे .....

फिरसे एक भावशून्य गमगीन मे चली जाती है|

बेटी के सवालो के जवाब न दे पाने की वजह से कोई उसे बाहर घुमाने ले जाता है |

After 1 Month:-

[Scene- 2]

(मॉल में)

[बाजार में अपने मामा के साथ जाती है वह सोचती है के उसके घर मै इतना दुखी माहोल है बहार भी एसा ही होगा परंतु वह एकदम विपरीत परिस्थिति देखती है,]

कोई अपने मम्मी-पापा के साथ खाना खा रहा है कोई मूवी के लिए टिकिट खरीद रहा है|

कोई नै मूवी की रिलीज की बात कर रहा है तो कोई कपडे खरीदने की बात कर रहा है

उसको खुद को आश्चर्य होता है वह घर पे आती है |

मम्मी : बेटा आ गई? क्या खाया ? क्या देखा तूने ?

बेटी : मम्मा....मुजे बहार अच्छा नहीं लगता (एक बात पूछु) मम्मी.....

मम्मी : बोलो बेटा

बेटी : मम्मा आप तो कहरहे थे के ,एरे पापा अब वापस नहीं आयेगे उन्होंने देश के लिए बलिदान दिया है |

मम्मी : हा बेटा (गर्व से आँखों में आंसू लिए)

बेटी : मम्मी मेरे पापा के बारे में तो कोई बात नहीं कर रहा |

सब लोग अपनी ख़ुशी मन रहे है | स्कूल में भी प्रवास का आयोजन हो रहा है | कोई दिवाली के लिए कपडे बनवा रहा है | कही तो नवरात्री की तैयारी शुरू हो रही है |

मम्मी : हा बेटा तो क्या गलत है |

बेटी : मम्मी .....जब सब कुछ वैसा का वैसा है तो फिर मेरे पापा क्यु नहीं मेरे साथ.....

मम्मी : चुप हो कर बेटी को देखती है जवाब देने की बजाय अपनी बेटी को (गले लगाके.....

शून्य मन्यस्क भाव से कुछ सोचती है)

बेटी : मम्मा ..... पिछले साल जब दादाजी हमें छोड़कर गए थे तब आपने हमें दीवाली में फटके भी नहीं जलने दिए | ना मिठाई बनाई |

मम्मी : हा बेटा | तो

बेटी : तो मम्मी नानी कह रही थी के पापा ने देश के लिए बलिदान दिया है तो भी देश के लोग क्यूं त्यौहार मनाने की ख़ुशी में जुटे है ?

मम्मी : बेटा सब को अपनी हिस्से की ख़ुशी जीने का अधिकार है |

बेटी : तो मेरी ख़ुशी... मेरे लिए खिलोने कौन लायेगा ? मुजे कोन मूवी ले जायेगा | मम्मा आप मुजे उठा न पाओगी तो आपको कौन कहेगा के " लाओ गुडिया को मुजे देदो" |

बोलो ना मम्मा....

मम्मा : बेटा अब मम्मा कभी नहीं थकेगी | क्युकी पापा मम्मा की ताकत बनके मम्मा के पास रहेगे |

बेटी : मम्मा पापा जब जाते थे मे मना करती थी तब आप कहती थी के मे आचे स्कूल में पढ़ सकू और खिलोने ले सकू इसलिए पापा जा रहे है | तो अब काम कौन करेगा मम्मा ?

मम्मी : अब मम्मा काम करेगी बेटा |

बेटी : तो में अकेली रहूगी पूरा दिन.....

मम्मी : नहीं घर मे जो लोग है वह आपका ख्याल रखेगे |

बेटी : मम्मी देश में से कोई आपको मदद नहीं करेगा |

मम्मी : मिली है | जो तुम्हारी परवरिश में काम आयेगी |

बेटी : मम्मी वो सब वापस कर दो ना पापा को ले आओ |

में उन्हें तंग नहीं करुँगी |

मम्मी : बेटा पापा हमारो यादो मैं है | और आपके पापा और मम्मी मे ही हु |

---------- x ----------

क्या हम सिर्फ जवानों के शव पे आंसू बहाके, या फेसबुक पे उनकी तस्वीरों को share या सिर्फ like करते रहेगे ? क्या एक दिन भी केवल हमारी खुशियों का त्याग नहीं कर सकते ?

श्रद्धांजलि देने से या त्याग करने से गए हुए लोग वापस नहीं आते किन्तु हमारी सबसे प्रिय वास्तु का त्याग अपने मन से संकल्प करके हमें ये कुर्बानी बखतोबख्त याद रहे?

कोई त्यौहार शांतिपूर्ण मनकार एक व्यक्तिगत श्रद्धांजलि अर्पण नहीं कर सकते ? क्या शहीदों की शहायत इतनी सस्ती है जो सिर्फ एक लाइक देने सेंफर्ज पूरा हो जाएगा? सिर्फ दो दिन profile pic change करके RIP लिखकर भारतीय होने का कर्तव्य पूरा हो जाएगा ? दुनिया में किसी भी देश में यह संभव नहीं है | कब तक हम गए हुए का शोक व्यक्त करके अपनी खुशियो में इस तरह खो जायेगे की किस्से जब कोई एसी खबर न मिले तब तक हम ये कुर्बानी याद भी नहीं रहेगी | देशभक्ति सिर्फ स्वतंत्रता दीन या गणतंत्र पर मनाई जाती है ?

अपने आप से एक सवाल पूछिये | के हम रोज बरोज की जिन्दगी में कितना हमारे देश और समाज के लिए सोचते है | कोई भी वस्तु लेने से पहले वो कहा बनाई जाती है वह खरीदने पर देश का कितना रुपया विदेशो मै जा रहा है और हम हमारे घर में बेठे हुए उनके आज भी गुलाम है | पर नही हमें तो फेसबुक पर कितने सारी तस्वीरे दुनिया को दिखानी है | हमें तो हमारे सगे सबंधियो को बताना है कि हम तुमसे कितने खुश है | हम हमारे घर में या बहार जाकर कितनी सेल्फी खीच सकते है | हमें तो हमारा status upload करना है |

<u>|| आखिर हम महान देश के || महान नागरिक है ||</u>

- कृपा रविन व्यास